रिकार्ड– बदल जाये दुनियां ना.....ओमशांति प्रातःक्लास 1.5.67

गीत की पहली लाइन में कुछ अर्थ है। बाकी सारा गीत किसी काम का नहीं है। जैसे गीता में भगवानोवाच्य मनमनाभव मद्याजीभव अक्षर ठीक है। बाकी सारी गीता में कुछ भी नहीं है। इसको कहा ही जाता है.....। अभी भगवान किसको कहा जाता है यह तो बच्चे अच्छी रीजि जान गये हैं। भगवान शिव(बाबा) को कहा जाता है। शिवबाबा आकर शिवालय स्थापन करते हैं। आते कहां हैं?वैश्यालय में। (खुद आकर) कहते हैं मीठे2 सिकीलधे लाडले रुहानी बच्चों। सुनती तो आत्मा है ना। जानते हो हम आत्मा अविनाशी हैं। यह देह विनाशी है। हम आत्मा अपने पिता परमपिता परमात्मा से महावाक्य सुन रही हैं। महावाक्य एक परमपिता परमात्मा के ही हैं जो महानपुरुष,पुरुषोत्तम बनाते हैं। बाकी जो भी महात्मायें ,गुरू आदि लोग हैं उनके (शब्दों) को महावाक्य नहीं कहेंगे। वो सब हैं झूठे वाक्य। शिवोअहम् जो कहते हैं वो बहुत गंदे (डर्टी) वाक्य हैं। ऐसे2 करके वाक्य सुनते2 मनुष्य कितने गंदे बन गये हैं। अभी यह महावाक्य सुनने से तुम फूल बनते हो। कांटे और फूल में कितना फर्क है। अभी तुम बच्चे जानते हो हमको कोई मनुष्य नहीं सुना रहे हैं। इस रथ पर शिवबाबा विराजमान हैं। वो भी आत्मा ही है ;परंतु उनको कहा जाता है परमात्मा। उंच ते उंच .....रहने वाला परमात्मा। तुमको परमआत्मा नहीं कहा जाता। अभी पतित आत्मायें कहती हैं कि हे परमपिता परमात्मा आओ। आकर हमको पावन बनाओ। वो है ही परम–पिता, परम बनाने वाला। ....पुरुषोत्तम अर्थात् सभी पुरुषों में उत्तम बनते हो। वो हैं ही देवतायें। तुम बच्चे ही खुद पुरुषोत्तम थे। अभी कनिष्ट बन गये हो। इसीलिये ही पुकारते हो बाबा हमको फिर से आकर पावन बनाओ। परमपिता अक्षर बहुत मीठा है। सर्वव्यापी कह फिर.....देते रहते हैं तो मीठापन निकल जाता है। तुम्हारे में भी बहुत थोड़े हैं जो बहुत प्यार से याद करते (हैं)अंदर में। वो स्त्री–पुरुष तो एक/दो को स्थूल में याद करते हैं। यह आत्माओं का परमात्मा को याद करना बहुत प्यार से। भक्ति मार्ग में भी इतने प्यार से पूजा नहीं कर सकते हैं। वो प्यार नहीं होता है। जानते ही नहीं हैं तो लव कैस होगा?आत्मा कहती है मेरा बाबा। .....। हर एक भाई कहते हैं कि बाबा ने हमको परिचय दिया है। हमको पढ़ाया है। भक्तिमार्ग में भी तुम बाबा2 कहकर पुकारते आये हो। हे भगवान! हे राम! कहते हैं ना ;परंतु वो लव नहीं....जिनसे कुछ मिलता है उनसे लव रहता है। बाप बच्चे का लव रहता है। जबकि बाप से वर्सा मिलता है। जितना जास्ती वर्सा उतना बच्चे का जास्ती लव रहता है। अगर बाप के पास कुछ भी प्रापर्टी है नहीं, डाडे के पास है तो वो बाप बाप को उतना लव नहीं करेगा। समझेंगे इससे पैसे मिलेंगे ;लेकिन यह तो है बेहद की बात। तुम बच्चे जानते हो हमको बाप पढ़ाते हैं। यह तो बहुत ही खुशी की बात है। भगवान हमारा बाप है। वो इनमें आकर हमको सृष्टि की आदि,मध्य,अंत का ज्ञान सुनाते हैं। जैसे रचता बाप को भी कोई नहीं जानते। वो जानने के कारण ही फिर अपने को कह देते हैं। जैसे कोई बच्चे से पूछो तुम्हारे बाप का नाम क्या है?कहेगा फलाना। उनके बाप का नाम क्या?आखरीन कह देते हैं हम। अब तुम बच्चे जानते हो कि उन सब बापों का बाप है जरूर। हमको जो अब बेहद का बाप मिला है उनका .....है ही नहीं।.....उंचे ते उंचा बाप है। तो बच्चों को अंदर में खुक्षी रहनी चाहिए ना। .....उनको.....इतनी खुशी नहीं होगी ;क्योंक प्राप्ति कुछ भी है नहीं। .....मुफ्त में कितने धक्के खाते हैं। धक्के खाते2 माथा टेकते2 माथा ही घिस जाता है। .....बहुत पैसे खर्च करते रहते हैं। प्राप्ति कुछ भी नहीं है। भक्ति मार्ग में अगर आमदनी होती तो भारतवासी तो बहुत साहुकार हो जाते। यह मंदिर आदि बनाने में करोड़ों (रुपया खर्च) करते हैं। तुम्हारा सोमनाथ का मंदिर सिर्फ एक ही तो नहीं था ना। सभी राजाओं के पास मंदिर थे। तुमको भी कितने पैसे दिये थे। 5000वर्ष पहले तुमको विश्व का मालिक बनाया था। ऐसे और कोई कह नहीं सकते हैं। एक बाप ही कह सकते है कि आज से 5000वर्ष पहले तुमको राजयोग सिखाकर ऐसा बनाकर

.....। बुद्धि में यह आना चाहिए ना कि हम.....उंच थे फि पुनर्जन्म लेते2...कदम जमीन में आकर पड़े हैं। पूरे इन्साल्वन्ट कौड़ी मिसल आकर बन गये हैं। फिर अभी हम उंच बाबा के पास जाते हैं जो ही हमको विश्व का मालिक बनाते हैं। वह एक ही यात्रा है ....आत्माओं को परमात्मा मिलता है। तो अंदर में वो लव रहना चाहिए ना। यहां आते हो तो बुद्धि में आना चाहिए कि हम उस बाप के पास जाते हैं। जिनसे हमको फिर से बाबा से बादशाही मिलती है। वो ही बाप हमको शिक्षा देते हैं बच्चों दैवी गुण धारण करो। सर्वशक्तिवान मुझ बाप को याद करो। मैं कल्प2 आकर कहता हूँ कि मामेकम् याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। दिल में यह आना चाहिए कि हम बेहद के बाप के पास आये हैं। बाप कहते हैं मैं इन्कागनीटो हूँ। आत्मा कहती है मैं गुप्त हूँ। बहुत छोटी बिंदी इतने बड़े शरीर में विराजमान ....का पार्ट कोई शरीर में नहीं है। वो तो आत्मा में है। यह बातें तुम अभी समझते हो। (समझते) हो हम जाते हैं शिवबाबा ब्रह्मा दादा के पास। जो कि कम्बाइंड हैं। उनसे हम मिलने जाते हैं। .....हम विश्व के मालिक बनते हैं। अंदर से कितनी बेहद की खुशी होनी चाहिए। जब मधुबन आते हो,अपने घर से निकलते हो तो अंदर में गुदगुदी होनी चाहिए। हम तो जाते हैं बेहद के बाप के .....। बाप हमको पढ़ाने के लिए आया है। हमको दैवी गुण धारण करने की युक्ति बताते हैं। (कैसे) निकलते समय अंदर में बहुत खुशी होनी चाहिए। जैसे कन्या पति के साथ मिलती है तो उसका मुखड़ा ही खिल जाता है। अब वो मुखड़ा खिलता है दुःख पाने के लिए। तुम्हारा मुखड़ा खिलता सदा सुख पाने के लिए। तो ऐसे बाप के पास आने से कितनी खुशी होनी चाहिए। अभी हमको बेहद का बाप मिला है। सतयुग में जावेंगे फिर डिग्री कम हो जावेगी। अभी तो तुम ब्राह्मण ईश्वरीय सन्तान ....हो। भगवान बैठ पढ़ाते हैं। वो हमारा बाप भी है फिर टीचर बनकर पढ़ात हैं। फिर पावन बना साथ में भी ले जायेंगे। हम आत्मा अब इस छी2 रावणराज्य से छूटते है। अंदर में बहुत अथाह खुशी (होनी) चाहिए जबकि बाप विश्व का मालिक बनाते हैं। पढ़ाई कितनी अच्छी रीति पढ़नी चाहिए। स्टुडेंट (अच्छी) रीति पढ़ते हैं तो अच्छे मार्क्स से पास होते हैं। यहां कहते भी हैं बाबा हम नारायण बनेंगे। है ही नर से नारायण बनने की कथा। वो झूठी कथायें जन्म जन्मांतर सुनते आये हो। अभी .....से एक ही बार तुम सच्ची2 सुनते हो। वो फिर भक्तिमार्ग में चला .....है। जैसे शिवबाबा ने.....लिया। उसकी फिर बड़ी2 जयंती मनाते आते हैं। वो कब आया, क्या किया, कुछ भी नहीं जानते हैं। .....जयंती मनाते हैं। वो कब आया ,कैसे आया कुछ पता नहीं है। कह देते कंसपुरी में.....है। अब वो पतित दुनियां में कैसे जन्म लेगा यह बाप बैठ समझाते हैं। बच्चों को कितनी खुशी होनी चाहिए। हम बेहद के बाप पास जाते हैं। अनुभव भी सुनाते हैं ना। हमको फलाने द्वारा तीर .....। बाबा आये हैं। बस , उसी दिन से लेकर हम बाप को ही याद करते हैं। यह है तुम्हारी बड़े ते बड़ी .....के पास जाने की यात्रा। बद्रीनारायण वा अमरनाथ पर जाते हैं। बद्रीनाथ कोई .....बैल पर आते नहीं हैं। बाबा तो चैतन है। बच्चों के पास जाते भी हैं। जैसे हम आत्मा मिलती हैं। .....परमात्मा बाप भी बोलते हैं शरीर द्वारा। आत्मा ही सब कुछ करती है, पार्ट बजाती है। हम आत्मा ब्राह्मण बनी हैं। वो जिस्मानी आक्युपेशन तो तुम्हारा है ही है। अभी यह बाप ने सुनाया है हम आत्मा हैं। हम बाप के पास जाते हैं पढ़ने के लिए। यह है भविष्य 21जन्म के शरीर ...के लिए। वो है इस जन्म के लिए। अब कौन सी पढ़ाई पढ़नी चाहिए वा कौन सा धंधा करना चाहिए?बाप कहते हैं दोनों करो। सन्यासियों मिसल घर—बार छोड़ जंगल में नहीं जाना है। यह तो प्रवृत्ति में है ना। दोनों के लिए यह पढ़ाई है। सब तो पढ़ेंगे भी नहीं। कोई अच्छा पढ़ेंगे, कोई कम। कोई को तो

एकदम तीर लग जावेगा। कोई तो (बावले) मिसल हंसते—बोलते रहेंगे। जैसे कि हर एक अपना.....निकालते हैं। .....पुजारियों का भी यह एक धंधा है। कोई कहते हैं हम समझने की कोशिश करेंगे। कोई कहते यह तो एकांत में समझने की बातें हैं। बस फिर गुम हो जाते हैं। कोई को तीर लगेगा तो आकर समझेंगे। कोई कहते हैं.....हमको फुर्सत नहीं है। समझो तीर लगा नहीं है। बाबा को तीर लगा, फट से छोड़ दिया ना। समझा कि बादशाही मिलती है। उनके आगे यह क्या है। हमको तो बाप से राजाई लेनी है। अभी बाप कहते हैं वो धंधा आदि भी भल करो। सिर्फ एक हफ्ता यह अच्छी रीति समझो। गृहस्थ व्यवहार भी सम्भालना है। रचना की पालना करनी है। वो तो रचकर फिर भाग जाते हैं। .....बाप कहते हैं तुमने रचा है तो फिर अच्छी रीति सम्भालो भी। समझो स्त्री अथवा बच्चा तुम्हारा कहना मानते हैं तो सपूत हैं। ना समझते हैं तो कपूत हैं। सपूत और कपूत ...पता पड़ जाता है ना। बाप भी कहते हैं तुम बाप की श्रीमत पर चलेंगे तो श्रेष्ठ बनेंगे। नहीं तो वर्सा नहीं मिल सकेगा। पवित्र बन सपूत बच्चा बन नाम बाला करो। तीर लग गया फिर तो कहेंगे बस अभी तो हम सच्ची कमाई करेंगे। बाप आये हैं शिववालय ....ले जाने तो कौन निभागा कम्बख्त होगा जो वैश्यालय में रहना चाहेगा। शिवालय में जाने लिए फिर लायक बनना है ना। मेहनत है। समझो कोई के पति ने जाकर दूसरी शादी भी की। फिर अभी याद करते हैं तो बुलाते हैं तो जा सकते हो। बोलो अब शिवबाबा को याद करो। मौत सामने खड़ी है। कल्याण तो उनका भी करना है ना। बोलो अब बाप को याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। पियर और ससुर घर का उद्धार करना है। जबकि बुलाया होता है तो फर्ज है कि उनका भी कल्याण करें। रहमदिल बनना चाहिए। साधु—संत आदि कोई भी हो बोलो यह है भक्ति मार्ग....। (ज्ञान) का सागर तो एक ही है। तो एक ही भगवान है। वो कहते हैं हे बच्चे तुम मूलवतन में पवित्र थे। अभी तो यह दुनियां ही पतित है। तब ही पुकारते हैं कि हे पतित—पावन आओ। मनुष्य पतित,तमोप्रधान हैं। तो दुनियां भी तमोप्रधान है। (वह) सतोप्रधान दुनियां में मनुष्य भी सतोप्रधान थे। हर चीज नई से फिर पुरानी जरूर होती है। उसको स्वर्ग इनको नर्क कहा जाता है। नर्क में सभी पतित आत्माएं .....। तो गंगा में स्नान कर (पावन) होने जाते हैं तो पतित ठहरे ना। पहले तो समझेंगे कि हम पतित हैं। इसलिए ही पावन बनना है। बाप आत्माओं को कहते हैं मुझे याद करो। तो तुम्हारे पाप मिट जावेंगे। साधु—संत आदि जो भी हैं सबको यह मेरा पैगाम दो कि बाप कहते हैं कि मुझे याद करो। इस योगाग्नि से अथवा याद की यात्रा से हमारी खाद निकलती जावेगी। बाप कहते हैं पाप नाश हो जावेंगे। तुम पावन बनकर मेरे पास आ जावेंगे। मैं तुम सबको साथ ले जाउंगा। जैसे बिच्छू होता है चलता जाता है, जहां नर्म ....देखता है तो डंक मार देता है। पत्थर को डंक मारकर क्या करेंगे?तुम भी बाप का परिचय दो। यह भी बाप ने समझाया है कि मेरे भक्त कहां रहते हैं?शिव के मंदिर में। कृष्ण के मंदिर में। ल.ना.के मंदिर में। भक्त मेरी भक्ति करते रहते हैं। हैं तो बच्चे ही ना। मेरे से राज्य लिया था। अब पूज्य से पुजारी बन गये हो। देवताओं के भक्त हैं ना। नम्बरवन है शिव की अव्यभिचारी भक्ति। फिर गिरते2 अभी तो भूत पूजा में जाकर लगे हैं। शिव के पुजारियों को समझाने में सहज होगा। यह सभी आत्माओं का बाप शिवबाबा है। स्वर्ग का वर्सा देते हैं। अभी बाप कहते हैं मुझे याद करो तो विकर्म विनाश हो जावे। हम तुमको बाप का पैगाम देते हैं। भक्ति से दुर्गति ही हुई है। अब बाप कहते हैं पतित—पावन ज्ञान का सागर मैं ही हूँ। ज्ञान भी सुना रहा हूँ ,पावन बनने लिए योग भी सिखा रहा हूँ। ब्रह्मा तन से मैसेज दे रहे हैं। मुझे याद ....करो। अपने 84जन्मों को याद करो। भारतवासियों ने ही 84जन्म लिये हैं। तुमको भक्त मिलेंगे मंदिरों में। और फिर कुम्भ के मेले पर जाते हैं। यहां भी तुम समझा सकते हो पतित—पावनी गंगा है या परमात्मा?हरिद्वार ....जाओ, बनारस में .....वो याद सिर्फ ब्रह्म

को ही करते हैं। गंगा जल का कितना मान रखते हैं। ऐसे ही पानी में गंद पड़ता रहता है। तो बच्चों को यह खुशी रहनी चाहिए हम किसके पास जाते हैं। है कितना ..... शिवबाबा क्या करे जो यह बड़ा आदमी दिखाई देवे। सन्यासियों के कपड़े तो पहन नहीं सकते। बाप कहते हैं मैं साधारण तन लेता हूँ। तुम्हीं राय दो कि मैं क्या करूं। इस रथ को क्या सिंगारूं?वो हुसैन का घोड़ी निकालते हैं ,उनको श्रृंगारते हैं। यहां शिवबाबा का रथ फिर बैल बना दिया है। बैल के मस्तक में .....शिव का चित्र दिखाते हैं। अब शिवबाबा बैल में कहां से आवेगा?भला मंदिर में बैल .....। यह है सब भक्ति मार्ग। बाप कहते हैं यह भक्ति की ड्रामा में नूंध। शांतिधाम ,सुखधाम फिर है दुःखधाम। यह ज्ञान आगे थोड़े ही कोई में था। अभी समझते हो हर कल्प2 हमने अनेक बार यह ज्ञान लिया है। आत्मा में 84जन्मों का पार्ट नूंधा हुआ है। यह बहुत वंडर है ना। फिर उसको कुदरत ही कहा जाता है। कितनी छोटी बिंदी है आत्मा और पार्ट बजाने लिए शरीर कितना बड़ा मिलता है। वंडर है ना। यह वंडरफुल ज्ञान है। देने वाला भी वंडरफुल है। महिमा कितनी बड़ी करते हैं। लिंग कितना बड़ा बनाते हैं। पांडवों के भी बहुत बड़े2 चित्र बनाते हैं। ऐसे कोई मनुष्य होते थोड़े ही हैं। ना इतनी भुजाओं वाली कोई देवियां आदि ही होती हैं। ब्रह्मा को कितनी भुजायें दे देते हैं। अब ब्राह्मा के तुम ढेर बच्चे हो ना। ब्र.कु.कु. बढ़ते ही जाते हैं। तो भुजायें भी बढ़ती जाती हैं। बाकी भुजायें तो हर एक को अपनी ही दी हैं ना। यह सब अनेक प्रकार की कथायें हैं। कोई काम की नहीं है। अब मूल बात कि तुम बच्चों को बहुत खुशी होनी चाहिए कि हम बाबा से विश्व के मालिक बनते हैं। ऐसे बाप को याद करना है। बाबा बार2 कहते हैं सदैव बुद्धि में यह स्मरण करते रहो .....बाप को याद करना पड़ता है कि विकर्म विनाश हो जायें। इसमें ही मेहनत लगती है। बार2 तुम भूल जाते हो। तुम बच्चे जानते हो हम पवित्र बन रहे हैं। फिर हम नई दुनियां में चले जावेंगे। अभी है पुरानी दुनियां। मनुष्य समझते हैं अभी .....हजार वर्ष पड़े हैं। इसको ही कहा जाता है घोर अंधेरा। कुम्भकरण की नींद में सोये पड़े हैं। आग लगेगी फिर हाय2 कर भस्म हो जावेंगे। आज इतने करोड़ों मनुष्य हैं कल सब खण्ड विनाश हो जावेंगे। सिर्फ भारत ही रहेगा। वहां तो (रहते) ही गंगा नदी पर हैं। प्रकृति भी दासी हो जाती है। वो है ही .....की दुनियां। भक्तिमार्ग में है ही अंधश्रद्धा। जनावरों में भी बदतर हैं। तुम भी अभी समझते हो हम बंदर डर्टी, ब्रुट्स थे। रौरव नर्क में थे। अब बाप पावन बनाने आये हैं। तुम्हारी यह है बुद्धियोग की यात्रा। इन्होंने फिर वो जिस्मानी यात्रा समझ ली है। बाबा ने रूहानी यात्रा सिखाई है। सिर्फ कहते हैं मुझे याद करो तो अन्त मते सो गते हो जावेगी। याद करते2 आत्मा पवित्र बन शरीर को छोड़.....। सतयुग में भी बैठे2 आत्मा शरीर छोड़ देती है। (रोने) —पीटने का अथवा मरने का यहां नाम (ही नहीं) है। भारत अमरलोक था ना। यह भी किसी को पता नहीं है। समझते हैं शंकर ने पार्वती को अमरकथा सुनाई। यह किसी को पता नहीं है कि यह मृत्युलोक है। तुम्हारे में भी बहुत बच्चे भूल जाते हैं। अमरलोक को याद ही नहीं करते हैं। हमको जाना है वाया शांतिधाम। तुम बच्चों को तो अथाह खुशी होनी चाहिए। बाबा भगवान हमको पढ़ाते हैं। एक की पढ़ाई है उसमें भी पहले2 मुख्य बात है बाप को याद करो। वो फुरना लगा हुआ है कि हम पावन कैसे बनें?तुम शिवबाबा पास आये हो। जानते हो बाबा हमको फिर से पढ़ाने आये हैं। भारत अविनाशी खंड है ना। इसका कब भी विनाश नहीं होता। तुम्हारा राज्य.....होगा तो दूसरा कोई राज्य नहीं होगा। आत्मा का भी समझाया है वो बिंदी (है)। सा. होने पर तो कुछ समझेंगे ही नहीं। समझो किसी को कृष्ण का सा. हुआ। अल्पकाल के लिए सा. होता है। उनसे कोई मुक्ति जीवनमुक्ति नहीं मिलती। वही तुम्हारी एम ऑब्जेक्ट सामने खड़ी है। पढ़ाई कितनी सहज है। उठते—बैठते बाप को और चक्र को याद करो। ओम।